साहित्योत्सव
Festival of Letters
21 - 26 February 2017

साहित्य अकादेमी

दैनिक समाचार बुलेटिन

बुधवार, 22 फ़रवरी 2017

आज के कार्यक्रम

मातृभाषा संरक्षण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
पूर्वाह्न 10 बजे, रवींद्र भवन परिसर

लेखक से भेंट
रूपा बाजवा के साथ
अपराह्न 2.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी पुरस्कार
अर्पण समारोह
सायं 5.30 बजे, कमानी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम
संगीता पुरेचा द्वारा
भरतनाट्यम्
सायं 7.00 बजे, कमानी सभागार

साहित्योत्सव 2017 का शुभारंभ

साहित्य अकादेमी लेखकों की अपनी संस्था है-सत्यव्रत शास्त्री

प्रख्यात संस्कृत विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने साहित्य अकादेमी की वार्षिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए संस्कृत आचार्यों द्वारा साहित्य के बारे में दी गई परिभाषाओं को उद्धृत करते हुए कहा कि साहित्यकार काव्य रचना करते हुए अपने लिए एक अलग संसार की रचना करते हैं, जो साहित्यिक रचना का रूप प्राप्त कर अजर-अमर हो जाता है। साहित्य अकादेमी को उन्होंने लेखकों की संस्था बताते हुए कहा कि देश में इसने अनुकरणीय मानक स्थापित किए हैं। इससे पहले अपने संक्षिप्त उद्गार में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी की वर्ष 2016 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए अकादेमी परिवार को बधाई दी।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने वर्ष 2016 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए बताया कि अकादेमी ने पिछले वर्ष 580 कार्यक्रम किए यानी हर 15 घंटे में एक कार्यक्रम, 482 पुस्तकें प्रकाशित कीं यानी हर अठारह घंटे में एक पुस्तक। अकादेमी ने देशभर के 178 पुस्तक मेलों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

भाषा सम्मान अर्पण

साहित्योत्सव के दौरान पहली बार आयोजित अकादेमी के भाषा सम्मान अर्पण समारोह में हल्बी, कुड़ुख एवं लद्दाखी भाषाओं के चार विद्वानों सर्वश्री हरिहर वैष्णव, निर्मल मिंज, लोजङ जमस्पल एवं थुप्सटन पालदन को सम्मानित किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के संक्षिप्त स्वागत भाषण के पश्चात् उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सम्मानित विद्वानों का पुष्पगुच्छ और शॉल से अभिनंदन किया। ताम्रफलक एवं पुरस्कार राशि का चेक अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा प्रदान किए गए। प्रशस्ति पाठ अकादेमी के सचिव ने किए। समारोह में स्वीकृति वक्तव्य देने के क्रम में विद्वानों ने अपनी सृजन-यात्रा के अनुभव साझा किए तथा संक्षेप में अपनी भाषाओं की वर्तमान स्थिति और अपने द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। स्वास्थ्यगत कारणों से श्री हरिहर वैष्णव तथा लोजङ जमस्पल समारोह में उपस्थित नहीं हो सके।

'मातृभाषा संरक्षण' विषयक संगोष्ठी

मातृभाषा मनुष्य की सबसे प्राचीन स्मृति है–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

साहित्योत्सव के पहले दिन अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'मातृभाषा संरक्षण' विषयक दो द्विवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रतिष्ठित कन्नड लेखक एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. एस. एल. भैरप्पा ने किया। उन्होंने कहा कि सभी शोध पत्र मातृभाषा में ही लिखे जाने चाहिए, और उनका अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए। इस अवसर पर प्रख्यात असमिया लेखक डॉ. ध्रुवज्योति बोरा ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि भारत की मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं की सुरक्षा, संरक्षण और विकास के लिए मजबूत राष्ट्रीय नीति की तत्काल आवश्यकता है, तभी भारतीय संस्कृति संरक्षित रह पाएगी। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए हमारे जीवन में मातृभाषा के महत्त्व और इसकी वर्तमान स्थिति पर संक्षिप्त चर्चा करते हुए लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के लिए आगे आने का आह्वान किया। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि मातृभाषा मनुष्य की सबसे प्राचीन स्मृति है। सत्रांत में अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित ओड़िया लेखक एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. सीताकांत महापात्र ने की। इस सत्र में सर्वश्री पलाश बरन पाल, उदय नारायण सिंह एवं मिशल सुल्तानपुरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. तिवारी ने आधुनिक समय में उन 30 कारणों का सविस्तार उल्लेख किया जिनके माध्यम से हम अपनी भाषाओं को खोते जा रहे हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री महापात्र ने कहा कि सृजनात्मक लेखकों के लिए मातृभाषा उनकी कल्पना शक्ति तथा उनके विचारों को तीव्रता प्रदान करती है। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा की अनिवार्यता पर ज़ोर दिया।

डॉ. सीताकांत महापात्र

डॉ. उदय नारायण सिंह

डॉ. चंद्रशेखर कंबार, प्रो. एस. एल. भैरप्पा, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. ध्रुवज्योति बोरा एवं डॉ. के. श्रीनिवासराव

भाषा सम्मान से विभूषित विद्वान

हल्बी 'हल्बा' या 'हल्बी' आदिवासी समुदाय की भाषा है, जो मुख्यतः मध्य भारत का निवासी है। यह पूर्व भारोपीय परिवार की भाषा है। हल्बी पर हिंदी, छत्तीसगढ़ी, ओड़िया और मराठी का गहरा प्रभाव है। हल्बी बोलने वालों की संख्या 5 लाख से भी अधिक है। हल्बी भाषा मे अपने योगदान के लिए भाषा सम्मान से विभूषित श्री हरिहर वैष्णव (1955) सुपरिचित हल्बी अध्येता लेखक एवं अनुवादक हैं। पिछले 30 वर्षों से हल्बी लोक साहित्य को संरक्षित करते हुए उन्होंने हिंदी अंग्रेजी में उनका अनुवाद भी किया है।

लद्दाखी भाषा को भोटी के नाम से भी जाना जाता है, जो लद्दाख, भारत के लेह ज़िले की भाषा है। यह चीनी-तिब्बती परिवार की भाषा है, जो तिब्बती भाषा का प्रभाव लिये हुए है, लेकिन मानक तिब्बती से भिन्न है। भारत में इसके बोलनेवालों की संख्या एक लाख से ज़्यादा है। लद्दाखी भाषा में अपने योगदान के लिए भाषा सम्मान से विभूषित श्री थुप्सटन पालदन (1941) प्रतिष्ठित लेखक और विद्वान हैं। लद्दाखी भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए चार दशकों से सक्रिय हैं। श्री लोजङ जम्सपल (1936) लद्दाखी, संस्कृत और तिब्बती भाषाओं के विद्वान हैं। पिछले पाँच दशकों से उनकी सक्रियता अनुकरणीय है।

कुड़ुख द्रविड़ भाषा परिवार की भाषा है, जो ओराँव एवं किसन आदिवासी समुदाय द्वारा बोली जाती है। मुख्य रूप से झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में इस समुदाय के लोगों का निवास है। बाङ्लादेश, नेपाल और भूटान में भी इस भाषा के बोलनेवाले बड़ी संख्या में रहते हैं। भारत में इसके बोलनेवालों की संख्या लगभग बीस लाख है। कुड़ुख भाषा के लिए भाषा सम्मान से विभूषित श्री निर्मल मिंज (1927) भाषा साहित्य तथा संस्कृति के विकास के लिए निरंतर सक्रिय हैं।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016 की घोषणा

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में मंगलवार, 21 फ़रवरी 2017 को आयोजित अकादेमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में 22 पुस्तकों को साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016 के लिए अनुमोदित किया गया। मलयाळम् और अंग्रेज़ी भाषाओं के पुरस्कार बाद में घोषित किए जाएँगे। पुस्तकों का चयन नियमानुसार गठित संबंधित भाषाओं की त्रिसदस्यीय निर्णायक समितियों की संस्तुतियों के आधार पर किया गया। पुरस्कार, पुरस्कार वर्ष के तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के पहले के पाँच वर्षों (1 जनवरी 2010 से 31 दिसंबर 2014) के दौरान प्रथम प्रकाशित अनुवादों को प्रदान किए गए हैं।

भाषा	अनुवाद पुस्तक	अनुवादक
असमिया	उपनिषद-पद्यानुवाद	तपेश्वर शर्मा
बाङ्ला	सत्येर अन्वेषण	गीता चौधुरी
बोडो	थेंफाख्रि तहसिलदारनि थामानि थुंग्रि	बीरहास गिरि बसुमातारी
डोगरी	काले कां ते काला पानी	कृष्ण शर्मा
गुजराती	गीत गोविंद	वसंत परीख
हिन्दी	संत वाणी, खंड 3 एवं 4	पी. जयरामन
कन्नड	ए.के. रामानुजन आयद प्रबंधगळु	ओ.एल. नागभूषण स्वामी
क़मीरी	अख़ ख़्वाब अख़ तस्वीर	क़ाज़ी हिलाल दलनवी
कोंकणी	सांवळ्यां रेगो	मीना काकोडकार
मैथिली	मिथिलाक लोक साहित्यक भूमिका	रेवती मिश्र

भाषा	अनुवाद पुस्तक	अनुवादक
मणिपुरी	ईबा लोईशिनखिद्रवा पूंसि वारी	अनीता निङ्गोबम
मराठी	लोकशाहीवादी अम्मीस दीर्घपत्र	मिलिंद चंपानेरकर
नेपाली	खोजी	ज्ञानबहादुर छेत्री
ओड़िया	आशीर्वादर रंग	मोनालिसा जेना
पंजाबी	औरत मेरे अंदर	अमरजीत कौंके
राजस्थानी	जीवो म्हारा साँवरा	रवि पुरोहित
संस्कृत	विविक्तपुष्पकरण्दः	रानी सदाशिव मूर्ति
संताली	भोग्नडी रेयाक दहिरे	गणेश ठाकुर हांसदा
सिंधी	भरत नाट्य शास्त्र	मोहन गेहाणी
तमिळ	पोरुप्पुमिक्क मणितर्कळ	पूर्ण चंद्रन
तेलुगु	वल्लभभाई पटेल	तंकशला अशोक
उर्दू	आंगलियात	हक्कानी-अल क़ासमी

साहित्योत्सव के कार्यक्रम

22 फ़रवरी 2017 (बुधवार)

मातृभाषा संरक्षण विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी) (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.00 बजे)
लेखक से भेंट (प्रख्यात भारतीय अंग्रेज़ी लेखिका रूपा बाजवा के साथ) (रवींद्र भवन परिसर, अपराह्न 2.30 बजे)
साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 अर्पण (कमानी सभागार, सायं 5.30 बजे)
सांस्कृतिक कार्यक्रमः भरतनाट्यम (कमानी सभागार, सायं 7.00 बजे)

23 फ़रवरी 2017 (गुरुवार)

युवा साहिती (साहित्य अकादेमी परिसर, पूर्वाह्न 10.00 बजे)
लेखक सम्मिलन (साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 के विजेताओं के साथ) (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे)
कवि अनुवादक (केदारनाथ सिंह के साथ हरीश त्रिवेदी) (रवींद्र भवन परिसर, सायं 4.30 बजे)
रामचंद्र गुहा द्वारा संवत्सर व्याख्यान (रवींद्र भवन परिसर, सायं 6.00 बजे)
सांस्कृतिक कार्यक्रमः लाई हारोबा, माव और काबुई नृत्य (मेघदूत रंगशाला-I, सायं 7.30 बजे)

24 फ़रवरी 2017 (शुक्रवार)

आमने-सामने (साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों से बातचीत) (मेघदूत रंगशाला-III, पूर्वाह्न 10.00 बजे)
पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन) (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे)
लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (साहित्य अकादेमी सभागार, पूर्वाह्न 11.00 बजे)
सांस्कृतिक कार्यक्रम : बाउल गान (मेघदूत रंगशाला-II, सायं 6.00 बजे)

25 फ़रवरी 2017 (शनिवार)

लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी) (साहित्य अकादेमी सभागार, पूर्वाह्न 10.00 बजे)
आदिवासी लेखक सम्मिलन (पैनल चर्चा, आदिवासी सृजन मिथकों का सस्वर पाठ एवं आदिवासी भाषा कवि सम्मिलन)
(रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे)
आओ कहानी बुनें (बच्चों के लिए मैजिक शो, कहानी की नाटकीय प्रस्तुति एवं कहानी लेखन, निबंधा लेखन प्रतियोगिताएँ आदि)
(रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 11.00 बजे)
सांस्कृतिक कार्यक्रमः संताली नृत्य (मेघदूत रंगशाला-I, सायं 6.00 बजे)

26 फ़रवरी 2017 (रविवार)

लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी) (साहित्य अकादेमी सभागार, पूर्वाह्न 10.00 बजे)
अनुवाद पुनर्कथन के रूप में विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे)
भारत की अलिखित भाषाएँः परिसंवाद (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 11.00 बजे)

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001
दूरभाष : 011 23386626/27/28, फ़ैक्स : 011 23382428
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in
फ़ेसबुक : http://www.facebook.com/Sahityaakademi